प्रेस विज्ञप्ति

भारत ने 2022 के नौ माह में लगभग रोजाना किसी न किसी रूप में प्राकृतिक आपदा को झेला: सीएसई रिपोर्ट

नुकसान की गिनती: 2,755 जानें गईं, 1.8 मिलियन हैक्टेयर फसल का क्षेत्र प्रभावित हुआ, 400, 000 घर नष्ट हुए, लगभग 70,000 पशु मारे गए।

भारत 2022: अतिविषम मौसमी घटनाओं पर एक विश्लेषण सीएसई और डाउन टू अर्थ पत्रिका द्वारा आज जारी किया गया। यह रिपोर्ट यह दर्शाती है कि भारत कितना असुरक्षित है, क्योंकि वह 'एक गर्म दुनिया में नए असामान्य' को लगातार देख रहा है।

नई रिपोर्ट को डाउनलोड करने के लिए कृप्या देखें: नुकसान और क्षति पर डाउन टू अर्थ पत्रिका का विशेष अंक यहां से डाउनलोड करें: https://www .downtoearth.org.in/

कॉप27 पर हमारी विशेष कवरेज को यहां देखें: https://www.downtoearth.org.in/climate-change

नई दिल ली वनंबर, 2022: भारत में अतिविषम मौसम की घटनाएं 1जनवरी और 30 सितंबर, 2022 के बीच 273 में से 241दिन दर्ज की गईं। इसका अर्थ यह है कि देश इन नौ माह के दौरान लगभग 90 प्रतिशत समय अतिविषम मौसम की किसी न किसी तरह की घटनाएं अपने एक से अधिक क्षेत्र में होते हुए देख रहा था।

यह सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) और डाउन टू अर्थ पत्रिका के द्वारा किए गए नए आकलन में उभर कर आया है, जिसे आज एक आनलाइन लांच इवेंट में जारी किया गया। यह आकलन वर्ष के एक बड़े हिस्से के दौरान भारत में अतिविषम मौसम की स्थिति का व्यापक अवलोकन उपलब्ध कराता है।

इस रिपोर्ट के साथ डाउन टू अर्थ ने मौसम आपदाओं पर भारत की मानचित्र पुस्तक (एटलस) की भी शुरुआत की। यह अतिविषम मौसम की घटनाओं पर एक आनलाइन सार्वजनिक संवादात्मक आंकड़ा कोष (डेटाबेस) है जिसे हर माह सामयिक किया जाएगा। इस रिपोर्ट को जारी करते हुए सीएसई की महानिदेशक सुनीता नारायण ने कहा, 'देश ने 2022 में अभी तक जो कुछ भी देखा है वह गर्म दुनिया में नया असामान्य है। जो अतिविषम घटनाएं हम देख रहे हैं, उनकी तीव्रता और बार बार होने में स्पष्ट वृद्धि हो रही है।' सुनीता नारायण ने कहा, 'हमारी रिपोर्ट अतिविषम मौसम की घटनाओं और उनसे जुड़े नुकसान और क्षति पर मौसमवार, महीनेवार, और क्षेत्रवार विश्लेषण उपलब्ध कराती है। यह भारत में अतिविषम मौसम की घटनाओं की तीव्रता और विस्तारित भूगोल पर एक साक्ष्य आधार तैयार करने का प्रयास है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस विषय पर जो डेटा सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है वह अपूर्ण है और समग्र तस्वीर प्रदान करने में असफल है।'

रिपोर्ट क्या कहती है?

एक आपदा, लगातार रोजाना

वर्ष 2022 के नौ माह में भारत ने एक आपदा के जैसे हालात रोजाना झेले। इसमें गर्म और सर्द हवाओं से लेकर चक्रवात और आकाशीय बिजली गिरने से भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन तक शामिल थे।

नुकसान और क्षति को कम करने आंका गया: डाउन टू अर्थ पत्रिका के सहयोगी संपादक और रिपोर्ट के लेखकों में से एक रजित सेनगुप्ता कहते हैं, 'इन आपदाओं में 2,755 जाने गईं, 1.8 मिलियन हैक्टेयर फसल का क्षेत्र प्रभावित हुआ, 4Þ,16, 667 से अधिक घर नष्ट हुए, लगभग 70,000 पशु मारे गए। ' उनके अनुसार, 'यह नुकसान और क्षति का जो आकलन है उसे संभवत: कम करके आंका गया है क्योंकि हर घटना का आंकड़ा कोष (डेटा), जिसमें सार्वजनिक संपत्ति या फसल का नुकसान भी शामिल है, को संकलित या अनुमानित नहीं किया गया है।' हर दूसरे दिन एक घटना के साथ, मध्य प्रदेश में अतिविषम मौसम की घटनाओं के साथ सबसे अधिक दिन देखे गए, लेकिन हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक मानव मृत्यु देखी गई -359 मौतें। मध्य प्रदेश और असम दोनों में एक समान 301 लोगों की मौतें हुई। असम ने सबसे ज्यादा क्षतिग्रस्त घरों और जानवरों की मौत की सूचना दी। कर्नाटक, जिसने 82 दिन अतिविषम मौसम की घटना का अनुभव किया, देश में प्रभावित फसल क्षेत्र का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा उसका था। मध्य प्रदेश ने आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार किसी भी फसल क्षेत्र के नुकसान की सूचना नहीं दी। सेनगुप्ता का कहना है कि 'ऐसा नुकसान और क्षति की रिपोर्टिंग में अंतर के कारण हो सकता है।'

मध्य और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में क्रमश: 198 और 195 अतिविषम मौसम की घटनाओं के साथ सबसे अधिक दिन दर्ज किए गए। मानव जीवन की क्षति के मामले में, मध्य भारत 887 मौतों के साथ सूची में सबसे ऊपर है, इसके बाद पूर्व और उत्तर पूर्व (783 मौतें) हैं।

सबसे गर्म, सबसे नम, सबसे शुष्क:

2022 में, भारत ने 1901 के बाद से अपना सातवां सबसे नम जनवरी माह दर्ज किया। यह मार्च भी 121 वर्ष में अब तक का सबसे गर्म और तीसरा सबसे सूखा रहा। यह 1901 से देश का तीसरा सबसे गर्म अप्रैल, 11वां सबसे गर्म अगस्त और आठवां सबसे गर्म सितंबर रहा।

पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत ने 121 वर्षों में सबसे गर्म और सबसे शुष्क जुलाई देखा। इस क्षेत्र ने 2022 में अपना दूसरा सबसे गर्म अगस्त और चौथा सबसे गर्म सितंबर भी दर्ज किया। घटना की 'प्रकृति' के संदर्भ में, पिछले नौ महीनों में सभी प्रकार के अतिविषम मौसम देखे गए हैं-30 राज्यों में आकाशीय बिजली और तूफान फैले हुए थे और इनकी वजह से 773 लोगों की जान गई।

मानसून के तीन माह जून से अगस्त तक प्रत्येक दिन देश के कुछ हिस्सों में भारी से बहुत भारी और अत्यधिक भारी वर्षा होने के संकेत मिले हैं। यही कारण है कि बाढ़ की तबाही ने किसी भी क्षेत्र को नहीं छोड़ा। उदाहरण के लिए, असम में, राज्य के बड़े हिस्से जलमग्न हो गए थे, जिससे जान, माल और आजीविका का नुकसान हुआ।

लू ने 45 लोगों की जान ले ली, लेकिन जो आधिकारिक आंकड़ों में दर्ज नहीं है, वह उत्तर भारत में लोगों पर लंबे समय तक उच्च तापमान का प्रभाव है। किसानों से लेकर निर्माण श्रमिकों तक और कैसे उन्होंने भीषण गर्मी का सामना किया। अच्छी खबर यह है कि चक्रवातों के कारण होने वाली मौतें कम थीं। देश में 95,066 हेक्टेयर को नष्ट करने वाले चक्रवातों के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार केवल दो लोगों की जान गई। नारायण ने कहा, 'यह भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) द्वारा चक्रवात की भविष्यवाणी पर किए गए अद्भुत कार्य के कारण हुआ है जिससे सरकारों को पर्याप्त चेतावनी दी जा सके। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि राज्य सरकारें, विशेषकर ओडिशा, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल, ने आपदा प्रबंधन की अपनी प्रणालियों में अद्भुत सुधार किया है।

परिभाषाएं, स्रोत और मूल्यांकन पद्धति

इंटर गर्वनमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) ने अतिविषम मौसम की घटनओं को स्थान विशेष और वर्ष के समय में दुर्लभ के रूप में परिभाषित किया है जबकि भारत के पास कोई आधिकारिक परिभाषा नहीं है। भारत मौसम विभाग अपनी वार्षिक रिपोर्ट 'भारतकी जलवायु कर विवरण' में लिखता है, आकाशीय बिजली और गरज के साथ आंधी तूफान, भारी से बहुत और अत्यधिक भारी वर्षा,भूस्खलन और बाढ़, शीत लहर, गर्म हवा, चक्रवात, बर्फबारी, धूल और रेत के तूफान, आंधी, ओलावृष्टि और आंधी को अतिविषम मौसम की घटनाओं के रूप में वर्गीकृत करती है। इस एजेंसी ने इन प्रत्येक मौसम की घटनाओं को अपनी वेबसाइट 'क्लाइमेंट हेजार्ड्स एंड वलनेरेबिलिटी एटलस आफ इंडिया', जिसे जनवरी, 2022 में शुरू किया गया है, और अपने अन्य प्रकाशनों में परिभाषित किया है।

सीएसई का "इंडिया 2022: अतिविषम मौसम की घटनाओं की आकलन" रिपोर्ट ने भारत सरकार के दो प्रमुख स्रोतों - आईएमडी और केंद्रीय गृह मंत्रालय के आपदा प्रबंधन प्रभाग (डीएमडी) से अपना आंकड़ा (डेटा) लिया है। इसके अलावा, इसने घटनाओं को ट्रैक करने के लिए मीडिया रिर्पोटों को स्कैन किया है, विशेष रूप से पूर्व-मानसून अवधि में जब आधिकारिक डेटा अधूरा होता है। मीडिया रिर्पोटों में नुकसान और क्षति की सीमा के बारे में और जानकारी भी प्रदान की जाती है।

आईएमडी से: पिछले 24 घंटों में अतिविषम मौसम की घटनाओं की जानकारी और पूवार्नुमान और चेतावनियां आईएमडी द्वारा अपने अखिल भारतीय मौसम सारांश और पूर्वानुमान बुलेटिन और दैनिक प्रेस विज्ञप्ति में प्रकाशित की जाती हैं। अतिविषम मौसम की घटनाओं के कारण नुकसान और क्षति पर, आईएमडी मीडिया रिर्पोटों का उपयोग करता है और अपने 'महीने के जलवायु सारांश' में मानव मृत्यु और पशुओं के नुकसान की संख्या प्रकाशित करता है।

डीएमडी से: केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत विभाग 'देश में बाढ़, भारी वर्षा जब कभी भी घटित हो के संदर्भ में स्थिति रिपोर्ट जारी करता है। इसमें आईएमडी और केंद्रीय जल आयोग (बाढ़ पर) का पूर्वानुमान शामिल है, और पिछले 24 घंटे की अवधि में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा रिपोर्ट किए गए नुकसान पर एक खंड भी है। जून 2022 से, स्थिति रिपोर्ट ने मानसून के मौसम में नुकसान और क्षति डेटा उपलब्ध कराया, जो इस अवधि के दौरान डूबने, बिजली गिरने, भूस्खलन आदि के कारण मानव मृत्यु की जानकारी देता है, साथ ही घरों, फसलों और पशुओं को नुकसान के आंकड़े भी देता है। इसके अलावा, प्रत्येक भारतीय राज्य में एक राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) है जो अपनी संबंधित वेबसाइट पर घटनाओं की रिपोर्ट करता है। हालांकि, यह डेटा अधूरा और अनियमित है। इस सीएसई/डीटीई रिपोर्ट में, एसडीएमए डेटा पर विचार नहीं किया गया है क्योंकि डेटा देश के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं है।

तीन स्रोतों-आईएमडी, डीएमडी और मीडिया रिर्पोटों में किसी भी विसंगति के मामले में -अधिकतम संख्या वाले स्रोत पर विचार किया गया है। इसके अलावा, चूंकि डीएमडी पूर्व-मानसून अवधि के लिए प्रभीवित फसल क्षेत्र पर डेटा प्रदान नहीं करता है, सीएसई/डीटीई ने इसे मीडिया रिर्पोटों से प्राप्त किया है (जिसका उपयोग आईएमडी द्वारा अपने नुकसान और क्षति डेटा को संकलित करने के लिए भी किया जाता है)।

डेटा में अंतर: सीएसई की पर्यावरण संसाधन इकाई के कार्यक्रम निदेशक और रिपोर्ट के लेखकों में से एक किरण पांडे के अनुसार, 'आईएमडी की विज्ञप्तियों से देश में अतिविषम मौसम की घटनाओं को दर्ज किए गए दिनों की संख्या के बारे में एक वास्तविक अनुमान लगाया जा सकता है लेकिन नुकसान और क्षति के मामले में बड़ा अंतर बना रहता है। डीएमडी राज्यों द्वारा प्राप्त डेटा प्रदान करता है और यह मुख्य रूप से मानसून के मौसम के लिए है। जैसा कि आईएमडी द्वारा परिभाषित किया गया है, इसमें सभी बड़ी घटनाएं शामिल नहीं हैं।'

सीएसई के शोधकर्ताओं का कहना है कि डेटा ही व्यापक नहीं है। उदाहरण के लिए, मीडिया रिपोर्ट्स में मानसून के मौसम (जून-सितंबर) के दौरान हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात में व्यापक फसल नुकसान का सुझाव दिया गया है, लेकिन सीजन के लिए केंद्र की संचयी नुकसान और क्षति रिपोर्ट का दावा है कि इन राज्यों में कोई नुकसान नहीं हुआ है। देश में अतिविषम मौसम की घटनाओं पर एक मजबूत सार्वजनिक डेटाबेस का न होना, आपदा स्थितियों और इसके प्रभावों के मूल्यांकन में कठिनाइयां पैदा करता है।

नारायण कहती हैं, 'यह स्पष्ट है कि अब, इन घटनाओं की तीव्रता और बार बार होने को देखते हुए देश को अब सिर्फ आपदाओं को ही गिनने की जरूरत नहीं है, नुकसान और क्षति पर विश्वसनीय संख्या की आवश्यकता है।' वह आगे कहती हैं, 'यह वही है जो जलवायु परिवर्तन का वॉटरमार्क है। यह किसी एक घटना के बारे में नहीं है, बल्कि घटनाओं की बढ़ी हुई आवृत्ति के बारे में है - जिसे हमने 100 वर्षों में अतिविषम घटना के रूप में देखा था, वह अब संकुचित होकर पांच साल या उससे भी कम में एक होने लगी है। इससे भी बदतर, यह अब सब एक साथ आ रहे हैं। हर माह एक नया रिकॉर्ड तोड़ रहा है। यह, बदले में, सबसे अधिक प्रभावित सबसे गरीब लोगों की कमर तोड़ रहा है जो इन बार-बार होने वाली घटनाओं से निपटने के लिए अपनी क्षमता खो रहे हैं।'

नारायण बताती हैं कि यही कारण है कि सीएसई द्वारा तैयार 'अतिविषम मौसम रिपोर्ट कार्ड' और डाउन टू अर्थ को समझना महत्वपूर्ण है। वह कहती हैं, 'रिपोर्ट इन अतिविषम घटनाओं के प्रबंधन के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता की बात करती है। हमें जोखिम को कम करने और लचीलापन में सुधार करने के लिए आपदा के प्रबंधन से आगे बढ़ना होगा। यही कारण है कि हमें बाढ़ प्रबंधन के लिए प्रणालियों को बेहतर बनाने के लिए शब्दों से अधिक की आवश्यकता है। एक ओर जानबूझकर जल निकासी और जल पुनर्भरण प्रणाली का निर्माण और हरे भरे स्थानों और जंगलों में निवेश करना ताकि आने वाले तूफानों के लिए पानी के इन स्पंजों को पुनर्जीवित किया जा सके।

वह कहती हैं, 'यह उन देशों से नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति की मांग करने की आवश्यकता की भी बात करता है जिन्होंने वातावरण में उत्सर्जन में योगदान दिया है और इस क्षति के लिए जिम्मेदार हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की व्याख्या करने वाले मॉडल स्पष्ट करते हैं कि अतिविषम मौसम की घटनाओं के बार बार होने और तीव्रता में वृद्धि होगी। आज हम यही देख रहे हैं। यह रिपोर्ट कार्ड अच्छी खबर नहीं है लेकिन इसे पढ़ने की जरूरत है ताकि हम प्रकृति के प्रतिशोध को समझ सकें जो हम आज देख रहे हैं और यह

भी समझें कि अगर हम जलवायु परिवर्तन के साथ उस पैमाने पर मुकाबल नहीं करते हैं जिसकी अभी जरूरत है, तो कल यह बदतर हो जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए मदद, साक्षात्कार आदि के लिए, कृपया सुकन्या नायर से sukanya.nair@cseindia.org, 8816818864 पर संपर्क करें।